Patrika (Indore), 10th July 2026, Page – 12 (Front Page – plus 02)

गेट काउंसलिंग : सीधे नौकरी या दूसरे विकल्प पर ध्यान

एमटेक से मोहभंग

25 हजार सीटें, पहले राउंड में 94 एडमिशन ही

पत्रिका पड़ताल

सुरभि भावसार
patrika.com

इंदौर. इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी करने के बाद अब बड़ी संख्या में विद्यार्थी एमटेक की बजाय सीधे नौकरी या दूसरे करियर विकल्प चुन रहे हैं। इसका असर इस साल मध्यप्रदेश की एमटेक प्रवेश प्रक्रिया में साफ दिखाई दिया है। ऐसे में इंजीनियरिंग की उच्च शिक्षा के सामने बड़ा संकट खड़ा हो गया है। बीटेक के बाद एमटेक करने की विद्यार्थियों की रुचि लगातार घट रही है। इसका सबसे बड़ा संकेत इस वर्ष मध्यप्रदेश की एमटेक प्रवेश प्रक्रिया में देखने को मिला, जहां गेट (ग्रेजुएट एप्टीट्यूड टेस्ट इन इंजीनियरिंग) काउंसलिंग के पहले चरण में प्रदेश की करीब 25 हजार सीटों के मुकाबले सिर्फ 94 सीटों का ही आवंटन हो सका। यह स्थिति न केवल इंजीनियरिंग कॉलेजों बल्कि तकनीकी शिक्षा और शोध व्यवस्था के लिए भी चिंता का विषय बन गई है।

शिक्षा विशेषज्ञों का कहना है कि यदि अगले चरणों में भी यही स्थिति बनी रही तो बड़ी संख्या में एमटेक सीटें खाली रह जाएंगी। इसका सीधा असर उच्च स्तरीय शोध, प्रयोगशालाओं, फैकल्टी के रिसर्च प्रोजेक्ट और संस्थानों की आर्थिक स्थिति पर पड़ेगा।

फेलोशिप भी नहीं रोक सकी गिरावट : गेट के माध्यम से एमटेक में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों को केंद्र सरकार की ओर से 12,400 रुपए प्रतिमाह फेलोशिप दी जाती है। इसके बावजूद पहले चरण में बेहद कम विद्यार्थियों ने प्रवेश लिया। अब अधिकांश कॉलेजों को नॉन-गेट श्रेणी के विद्यार्थियों पर निर्भर रहना पड़ेगा। विशेषज्ञों का मानना है कि गेट से आने वाले विद्यार्थी अकादमिक रूप से अधिक तैयार होते हैं। ऐसे में उनके कम होने से शोध और शिक्षण की गुणवत्ता भी प्रभावित हो सकती है।

2019 तक भर जाती थीं लगभग सभी सीटें

प्रो. रवींद्र मंडलोई बताते हैं कि वर्ष 2019 तक एमटेक की लगभग सभी शाखाओं की सीटें गेट स्कोर के आधार पर भर जाती थीं। कोविड-19 के दौरान प्रवेश में गिरावट शुरू हुई और पिछले दो वर्षों से अधिकांश ब्रांचों में गेट के जरिए प्रवेश 20 से 30 प्रतिशत तक सीमित हो गया, लेकिन इस वर्ष पहले राउंड में मात्र 94 सीटों का आवंटन पूरे सिस्टम के लिए चेतावनी है। वे बताते हैं कि आज भी कई बड़ी कंपनियां गेट स्कोर के आधार पर भर्ती करती हैं। हाल ही में उच्च शिक्षा मंत्री ने भी सहायक प्राध्यापक (असिस्टेंट प्रोफेसर) भर्ती में गेट स्कोर को महत्व देने की बात कही है।

आइआइटी इंदौर ने बताई वजह

आइआइटी इंदौर के पीआरओ प्रो. सुनील कुमार के अनुसार, कई प्रतिभाशाली विद्यार्थी मामूली अंतर से गेट क्वालिफाई नहीं कर पाते। ऐसे विद्यार्थियों को अवसर देने के लिए संस्थान ने नॉन-गेट प्रवेश की व्यवस्था की है। गेट काउंसलिंग पूरी होने के बाद बची सीटों पर विभाग स्तर पर लिखित परीक्षा और इंटरव्यू के आधार पर प्रवेश दिया जाता है।

क्यों घट रही है लोकप्रियता : विशेषज्ञों के अनुसार विद्यार्थियों की प्राथमिकताएं तेजी से बदल रही हैं। बीटेक के बाद आइटी और कोर सेक्टर की कंपनियां आकर्षक पैकेज पर सीधे नौकरी दे रही हैं। बड़ी संख्या में विद्यार्थी एमटेक की बजाय कैट की तैयारी कर आइआइएम और अन्य संस्थानों से एमबीए को बेहतर विकल्प मान रहे हैं। नौकरी के साथ पढ़ाई करने वाले विद्यार्थी निजी विवि का रुख कर रहे हैं, जहां उपस्थिति और पाठ्यक्रम में लचीलापन है। आइआइटी और एनआइटी में अब गेट के बाद बची सीटों पर नॉन-गेट अभ्यर्थियों को भी प्रवेश मिल रहा है, जिससे गेट परीक्षा का आकर्षण पहले जैसा नहीं रहा। **शेष@मध्यप्रदेश**